17 मई 2018, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि

प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 4 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मई (द्वितीय), 2018 (वीर नि. संवत्-2544) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

विधान एवं शिविर संपन्न

सूरत (गुज.) : यहाँ दीवान ब्रदर्स परिवार सूरत द्वारा 28 अप्रैल से 6 मई तक द्वितीय अपूर्व अवसर निजात्मकल्याण शिविर का आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर समारोह का ध्वजारोहण श्रीमती पुष्पादेवी ध.प. स्व. ओमप्रकाशजी आशीषभाई, कमलभाई एवं अजयजी जैन शालू-नोवाग्रुप ने किया। सभा मंडप के उद्घाटनकर्ता शाह परिवार एवं समयसार विधान के उद्घाटनकर्ता श्री नन्दकिशोरजी अशोकजी एवं समस्त विनाक्या परिवार थे।

इस अवसर पर डॉ. हुकमंचदजी भारिल्ल के अहिंसा, आत्मा-परमात्मा आदि अनेक विषयों पर प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र.सुमतप्रकाशजी द्वारा प्रात: चार अभाव एवं सायंकाल पांच भाव विषय पर प्रवचन, पण्डित प्रदीपजी झांझरी द्वारा समयसार गाथा 38 व छहढाला पर प्रवचन तथा डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा प्रात: 'मेरी भावना' व सायंकाल छहढाला पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

इसी प्रसंग पर एक दिन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा 'धर्म क्या और क्यों' विषय पर सेमिनार आयोजित किया गया।

अंतिम दिन 'जैन दृष्टि में तीन लोक' विषय पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा सेमिनार आयोजित किया गया।

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा गुणस्थान विषय पर कक्षा ली गई।

प्रतिदिन प्रात: विधान के समस्त कार्य विधानाचार्य श्री भरतभाई मेहता द्वारा पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री एवं पण्डित वीकेशजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुये। इन्हीं के द्वारा प्रतिदिन सायंकाल जिनेन्द्र-भक्ति एवं दिन में तीन समय बच्चों की पाठशाला संचालित की गई। समस्त कार्यक्रमों का संचालन श्री ज्ञाताजी झांझरी ने किया।

विधान एवं शिविर आयोजनकर्ता श्री विद्याप्रकाशजी, श्री संजयजी दीवान परिवार ने प्रतिवर्ष ऐसा शिविर लगाने की भावना व्यक्त की।

गुणस्थान चर्चा शिविर संपन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ देवनगर स्थित सीमंधर जिनालय में दिनांक 1 से 5 मई तक प्रथम बार गुणस्थान चर्चा शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा तीनों समय गुणस्थान विषय पर प्रोजेक्टर के माध्यम से कक्षाएं ली गईं। साथ ही ब्र. यशपालजी जैन जयपुर का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। शिविर में लगभग 250 साधर्मियों ने लाभ लिया।

अन्तिम दिन गुणस्थान विषय पर स्थानीय विद्वानों द्वारा गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें आशीषजी शास्त्री, रजितजी शास्त्री, विवेकजी शास्त्री, सुमितजी शास्त्री, शुभमजी शास्त्री ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। गोष्ठी का मंगलाचरण कु. शालिनी जैन शाश्वतधाम उदयपुर एवं आभार प्रदर्शन पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड ने किया।

उपाध्याय कनिष्ठ का परीक्षा परिणाम

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के उपाध्याय कनिष्ठ (सत्र-2017-18) का कॉलेज परीक्षा परिणाम इसप्रकार रहा -

(1) यश जैन पुत्र श्री योगेश जैन, खुरई (96.4%) कक्षा में प्रथम स्थान। **(2) अनिमेष जैन** पुत्र श्री चेतनप्रकाश भारिल्ल, राघौगढ (90.4%) कक्षा में द्वितीय स्थान। **(3) स्वस्ति सेठी** पुत्री श्री संजय सेठी, जयपुर (89.4%) कक्षा में तृतीय स्थान।

कॉलेज में भी प्रथम तीन स्थानों पर ये ही विद्यार्थी रहे हैं।

ज्ञातव्य है कि कुल 44 छात्रों ने परीक्षा दी, जिसमें से 34 छात्र प्रथम श्रेणी एवं 10 छात्र द्वितीय श्रेणी से उत्तीण हुये।

सभी विद्यार्थियों को टोडरमल महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

41वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 12 अगस्त से मंगलवार 21 अगस्त, 2018 तक)

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं अन्य अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा। शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

संपर्क सूत्र - पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन : 0141-2705581, 2707458

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये? 10

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

समन्तभद्रस्वामी ने श्रावकाचार में सच्चे गुरु का स्वरूप लिखा है –

''विषयाशावशातीतो निरारंभो परिग्रहः।
ज्ञान ध्यान तपो रक्तः तपस्वी स प्रसस्यते।।

पंचेन्द्रियों के विषयों की आशा से अतीत आरम्भ और परिग्रह से रहित, ज्ञान ध्यान व तप में लीन तपस्वी साधु ही प्रशंसा के योग्य हैं। मेरी भावना में भी ऐसा ही लिखा है –

विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्य भाव धन रखते हैं।
निज पर के हित साधन में जो निश दिन तत्पर रहते हैं।।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के दुख समूह को हरते हैं।।

गुरु के प्रसाद से ही या उनके उपदेशों से ही तो हम परमात्मा और आत्मा का स्वरूप समझ पाते हैं।

सद्गुरु के उपदेश बिना तत्वज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं। भले ही यह कथन निमित्त का है परन्तु निमित्त–नैमित्तिक सम्बन्ध भी तो कोरी कल्पना नहीं है।

प्रश्न : सच्चे गुरु की पहचान क्या है?

उत्तर : सच्चे गुरु की पहचान की कोई समस्या नहीं है। स्वर्ण के पारखी को स्वर्ण और पीतल का भेद करने में, जौहरी को काँच व हीरा में भेद करने में एक क्षण भी नहीं लगता। पहचान के लिए छहढाला की निम्न पंक्तियाँ स्मरणीय हैं –

अरि–मित्र, महल–मसान कंचन–कांच, निन्दन–थुतिकरन।
अर्घावतारन–असि प्रहारन में सदा समता धरन।

सच्चे साधु शत्रु–मित्र में, महल–मसान में, कंचन–कांच में, निन्दा करने वालों और स्तुति करने वालों में, पूजा करने वाले या तलवार का वार करने वाले में समान रूप से समता भाव रखते हैं।

इसप्रकार गुरु के स्वरूप को पहचान कर उनकी उपासना करना, विनय भक्ति करना दूसरा आवश्यक है।

३. स्वाध्याय – सत् शास्त्रों का पढ़ना–पढ़ाना, सुनना–सुनाना, वाँचना, पूछना, मनन करना, उपदेश देना आदि स्वाध्याय कहा जाता है। स्वाध्याय में ''स्व+अधि+आय = स्वाध्याय'' इसका शाब्दिक अर्थ होता है – अपने स्वभाव का सूक्ष्म अध्ययन। अपने स्वभाव के अध्ययन की प्रक्रिया में अपने विभाव और संयोगी पर तत्त्व का अध्ययन आ ही जाता है। परन्तु पर को मात्र जानना है जानकर उसे छोड़ना है, स्व को मात्र जानना ही नहीं बल्कि जानते रहना है, स्वयं में जमना है रमना है उसी में समा जाना है, अतः स्वाध्याय में मुख्यता आत्म ज्ञान की ही है।

चारित्र सार नामक ग्रन्थ में लिखा है – ''स्वस्मै हितो अध्यायः स्वाध्याय'' अर्थात् अपने आत्मा का हित करने वाला अध्ययन करना स्वाध्याय है। तत्वज्ञान को पढ़ना–पढ़ाना स्मरण करना आदि स्वाध्याय है।

स्वाध्याय को जिनवाणी में परमतप कहा है –'स्वाध्यायः परम तपः' स्वाध्याय ही उत्कृष्ट तप है। स्वाध्याय को मोक्षमार्ग का उत्कृष्टतम साधन होने से सभी धर्म साधकों के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। स्वाध्याय का श्रावक के षट्आवश्यकों में तृतीय स्थान है, मुनियों के षट्आवश्यकों में भी स्वाध्याय को पंचम स्थान प्राप्त है। बारह तपों में भी स्वाध्याय नामक तप है।

इस प्रकार 'स्वाध्याय' धर्म साधन का अत्युपयोगी व महत्वपूर्ण अंग है। इससे सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति तो होती ही है साथ ही सर्वाधिक उपयोग की एकाग्रता, मन की स्थिरता व चित्त की निश्चलता स्वाध्याय से ही होती है। अतः नियमित स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए।

४. संयम – संयम अर्थात् अपने उपयोग को पर पदार्थ पर से हटाकर आत्मसन्मुख करना, अपने में समेटना, सीमित करना, अपने में लगाना, उपयोगकी स्वलीनता निश्चय संयम है और पाँच स्थावर और त्रस – इन छह कायों के जीवों की हिंसा से बचना, पाँच व्रतों को धारण करना क्रोधादि कषायों का निग्रह करना, पाँच इन्द्रियों को

जीतना; ये व्यवहार संयम हैं।

यह संयम सम्यग्दर्शन के बिना नहीं होता और यह संयम मुख्यतया मनुष्य पर्याय में ही होता है, कहने को तिर्यञ्चों को भी हो सकता, पर वह नगण्य ही है। अतः मनुष्य जन्म की सार्थकता संयम से ही हैं। यह अवसर चूकना योग्य नहीं है। **(क्रमशः)**

बाह्यक्रिया पर तो इनकी दृष्टि है और परिणाम सुधरने–बिगड़ने का विचार नहीं है। और यदि परिणामों का भी विचार हो तो जैसे अपने परिणाम होते दिखायी दें उन्हीं पर दृष्टि रहती है, परन्तु उन परिणामों की परम्परा का विचार करने पर अभिप्राय में जो वासना है उसका विचार नहीं करते। और फल लगता है सो अभिप्राय में जो वासना है उसका लगता है।...

– मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 238

बाल संस्कार शिविर संपन्न

देवलाली–नासिक (महा.) : यहाँ कहान नगर में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मुम्बई के तत्त्वावधान में दिनांक 29 अप्रैल से 5 मई तक 20वाँ बाल संस्कार शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री, अनिलभाई दईसर, आशीषजी शास्त्री, विवेकजी शास्त्री, अभिषेकजी शास्त्री, देवांगजी शास्त्री, मन्थनजी शास्त्री, जितेन्द्रजी शास्त्री, प्रतीकजी शास्त्री, उर्विशजी शास्त्री, ब्र. चेतनाबेन एवं ब्र. जिनलबेन द्वारा कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। रात्रि में विरागजी शास्त्री द्वारा संगीतमय कथा विशेष आकर्षण का केन्द्र रही।

शिविर में प्रात: प्रार्थना, जिनेन्द्र–पूजन, गुरुदेवश्री के सी.डी.प्रवचन, वर्ग कक्षाएं, सामूहिक कक्षा, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से बालकों में जैनधर्म के संस्कारों का बीजारोपण किया गया। शिविर में लगभग 250 बच्चों ने लाभ लिया।

वेदी शिलान्यास संपन्न

सनावद (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन परमागम मंदिर ट्रस्ट, मुमुक्षु मंडल एवं कंवरचंद ज्ञानचंदसा द्वारा दिनांक 22 अप्रैल को महावीर स्वामी जिनमंदिर, सीमंधर समवशरण, स्वाध्याय भवन, सम्मेद–शिखरजी की रचना का वेदी शिलान्यास देव–शास्त्र–गुरु की आराधना पूर्वक एवं जिनवाणी व 208 शुद्धिकलश शोभायात्रापूर्वक संपन्न हुआ।

शिलान्यास सभा की अध्यक्षता श्री अशोकजी बड़जात्या (राष्ट्रीय अध्यक्ष महासमिति) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री आनंदकुमारजी जैन (आई.जी.–श्रीनगर जम्मू कश्मीर) व श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री वी.के.जैन दिल्ली व श्री दीपचंदजी सनावद उपस्थित थे।

श्री महावीर स्वामी जिनमंदिर का शिलान्यास श्री विमलकुमारजी–श्रीमती कुसुमजी दिल्ली, श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन का शिलान्यास श्री निमेषभाई व अनंतभाई की ओर से पण्डित रजनीभाई, बीनूभाई मुम्बई, राजूभाई व प्रतीकभाई अहमदाबाद तथा वीतराग–विज्ञान पाठशाला भवन का शिलान्यास श्री प्रदीपजी–कुसुमजी चौधरी किशनगढ की ओर से डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा 1100–1200 साधर्मियों के मध्य संपन्न हुआ।

समारोह का ध्वजारोहण श्री अशोकजी–विजयजी बड़जात्या परिवार इन्दौर ने किया। इसके अतिरिक्त श्री महावीर स्वामी का चित्र अनावरण श्री चंद्रप्रकाशजी गंगवाल इन्दौर व श्री अशोकजी सुभाष ट्रांसपोर्ट भोपाल ने, आचार्य कुन्दकुन्द का चित्र अनावरण श्री विमलकुमारजी कुसुमजी, श्री नरेशजी आशाजी लुहाड़िया व श्री वी.के. जैन दिल्ली ने, गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का चित्र अनावरण श्री राजूभाई प्रतीकभाई अहमदाबाद, श्री बीनूभाई शाह मुम्बई, श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री महावीरजी पाटील सांगली एवं डॉ. किरण शाह पूना द्वारा किया गया।

इस अवसर पर 208 इन्द्राणियों ने मंगल कलशों में मंत्रोच्चार सहित शुद्धजल से शिलान्यास की शुद्धि का कार्य किया।

इसी प्रसंग पर दिनांक 17 से 21 अप्रैल तक बाल–युवा शिविर एवं योगसार विधान का भी आयोजन किया गया।

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (15)

क्या आत्मकल्याण हमारा एकमात्र लक्ष्य है?

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

यूं तो मोक्षमार्ग की शुरुआत पशु पर्याय में भी हो सकती है, होती है; परन्तु पशु पर्याय के संयोगों में यह दुर्लभ है। मोक्षमार्ग की शुरुआत और विकास के लिये मानव जीवन आदर्श है, मुक्ति की प्राप्ति तो होती ही सिर्फ मनुष्य पर्याय से है। महावीर के जीव के मोक्षमार्ग की शुरुआत वर्तमान से 10 भव पूर्व सिंह की पर्याय में हुई थी, जब वह सिंह किसी पशु के शिकार में व्यस्त था। दो चारणऋद्धिधारी मुनिराज आकाशमार्ग से अवतरित हुए और उस सिंह को स्वरूपसंबोधन दिया। यह उस जीव की पात्रता ही थी कि उस एक संबोधन का निमित्त पाकर उसे सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हुई और उसका मोक्षमार्ग प्रशस्त हुआ।

जरा कल्पना तो कीजिये कि कैसी अद्भुत होगी वह धर्मसभा, जहाँ श्रोता मात्र एक और वक्ता दो-दो! श्रोता पशु और वक्ता मुनिराज! श्रोता मृगराज और वक्ता महामानव!

क्या वह धर्मसभा किसी भी अन्य धर्मसभा से कम थी?

कम क्या, वह तो एक महानतम धर्मसभा थी जिसका परिणाम शत-प्रतिशत रहा। क्या आपने ऐसी कोई धर्मसभा देखी है जिसके शत-प्रतिशत श्रोता तत्क्षण सम्यग्दर्शन की प्राप्ति करके ही उठे हों?

आखिर इस बात से क्या फर्क पड़ता है कि श्रोता कौन और कितने थे तथा वक्ता कौन और कैसे थे? महत्वपूर्ण यह है कि सभा का निष्कर्ष क्या रहा।

उस श्रोता की पात्रता तो देखिये!

प्रथम धर्मउपदेश सुनते ही अभक्ष्य भक्षण का त्याग!

वह भी किस कीमत पर?

आत्मबलिदान की कीमत पर, अपने प्राणों की कीमत पर।

सिंह शाकाहार कर नहीं सकता और अब मांसाहार उसे स्वीकार नहीं था, किसी भी हालत में, किसी भी कीमत नहीं, अपने प्राणों की कीमत पर भी नहीं। तत्क्षण उसने मांसाहार का त्याग कर दिया और सम्यग्दर्शन की प्राप्ति की।

अरे! जहाँ भव के अभाव का अवसर दस्तक दे रहा हो तब इन भवों की परवाह भला कौन करे, क्यों करे?

महान उपलब्धि के लिये समर्पण भी महान चाहिये, सम्पूर्ण चाहिये। इसमें मोलभाव को अवकाश नहीं।

मोक्षमार्ग में प्रवेश की हमारी वर्तमान पात्रता क्या है? इसका आंकलन करना हो तो हम अपनी वर्तमान परिणति का आंकलन करें। क्या हमें जगत का प्रत्येक जीव 'भगवान आत्मा' दिखाई देता है? क्या हमारे चित्त में उनके प्रति सहिष्णुता और करुणा का भाव विद्यमान है? क्या हमारा खान-पान, रहन-सहन और आचरण-व्यवहार अहिंसा मूलक है? क्या हम अपने उक्त व्यवहारों में हिंसा-अहिंसा का विवेक भी रखते हैं? क्या यह जानने पर कि अमुक पदार्थ के भक्षण में हिंसा बहुतायत से निहित है, हम उससे विमुख हो पाते हैं? क्या हमारे जीवन में साधर्मी वात्सल्य की प्रधानता है? क्या हमें उनकी संगति सुहाती है? क्या हमारे जीवन में स्वाध्याय की प्रधानता है और क्या हमारे चिन्तन-मनन का विषय निज भगवान आत्मा हुआ करता है?

यदि हमारे अन्दर उक्त सबकुछ नहीं है तो हम समझ सकते हैं कि क्यों उस सिंहराज को पशुपर्याय में सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होकर मोक्षमार्ग की शुरुआत हो पाई और क्यों हमारे और मोक्षमार्ग के बीच एक सुरक्षित दूरी अभी तक बनी हुई है।

अरे! **मनुष्य पर्याय में तो यह सुविधा उपलब्ध है कि सम्पूर्ण निर्दोष आहार ग्रहण करके भी जीवन की समस्त आवश्यकताएं सम्पूर्णपने पूरी की जा सकती है, तब आखिर अभक्ष्य भक्षण क्यों?**

जिन्हें कदाचित् यह विचार बेचैन किया करता हो कि इतने वर्ष तो बीत गए पढते-सुनते पर कुछ होता तो है नहीं, उन्हें इस अवसर पर स्वयं अपनी परिणति का आकलन कर लेना चाहिये कि क्या सचमुच वे स्वयं तैयार हैं इस महान उपलब्धि के लिये? क्या यह कार्य उनकी प्रथम और सर्वोच्च प्राथमिकता पर है? क्या वे इसकी कीमत चुकाने के लिये तैयार हैं? आत्मसमर्पण की कीमत! सर्वस्व समर्पण की कीमत!!

यदि हमें आत्मकल्याण करना है तो यह कार्य मात्र हमारी प्रथम प्राथमिकता नहीं, वरन एकमात्र प्राथमिकता होना चाहिये।

यह किसी जिद नहीं, वरन वस्तुस्वरूप है।

क्यों?

क्योंकि आत्मकल्याण के अलावा अन्य जो कुछ भी हमारी प्राथमिकता पर होगा; वह संसार होगा, संसार का कारण होगा। यदि हम संसार को भी अपनी प्राथमिकता की सूची में रखेंगे (चाहे अंतिम नंबर पर ही सही) तो मुक्ति का उपक्रम कैसे करेंगे? आखिर दोनों की दिशा एक दूसरे के एकदम विपरीत जो है।

सिंह की पर्याय में स्थित **महावीर का जीव यदि इहभव की परवाह करता तो उसके भवान्तर बिगड़ जाते। उसने भव की परवाह छोड़ी तो उसके भव का अभाव हो गया।**

अत्यंत स्वाभाविक ही तो है, जिस मेहमान की आप उत्कृष्ट संभाल, देखभाल और स्वागत-सत्कार करेंगे; वह आपको छोड़कर जायेगा कैसे, क्यों? यदि कदाचित अपनी आवश्यकतानुसार वह चला भी जावे तो उसके मुख से आपकी मेहमाननवाजी के किस्से सुनकर अन्य अनेक लोग आपकी ओर आकर्षित होते रहेंगे। जब आप उनकी ओर से उदासीन होंगे, तभी वह आपका साथ छोड़ेंगे। ठीक इसीप्रकार जब हम सभी दिन-रात प्रतिक्षण-प्रतिपल इस देह की संभाल के प्रति समर्पित हैं तो

यह देह हमें छोड़ेगी कैसे? यदि हमें देहमुक्त होना है, भवमुक्त होना है, भव का अभाव करना है तो हमें इस देह की साजसंवार और परवाह छोड़नी ही होगी, अन्य कोई उपाय नहीं।

हालांकि धर्म एक सकारात्मक **(Positive)** प्रक्रिया है, यह नकारात्मक **(Negative)** नहीं है, ''आत्मोन्मुख होना धर्म है'' यह इसका सकारात्मक **(Positive)** पक्ष है; पर चूंकि वर्तमान में हम सभी बहिर्लक्ष्यी हैं, बाह्य पदार्थों में ही उलझे हुए हैं, इसलिये यह कहा जाता है कि बाह्य पदार्थों से लक्ष्य हटाना धर्म है।

हमें इस बात का स्पष्ट और दृढता के साथ निर्णय करना होगा कि संसार में मात्र दो ही मार्ग हैं –

एक संसार मार्ग

और

दूसरा मोक्षमार्ग

एक संसार का कारण और दूसरा मोक्ष का कारण; तीसरी कोई अन्य नियति या गंतव्य, लक्ष्य या प्राप्तव्य नहीं है, न ही हो सकता है। यदि तू पूरी तरह मोक्षमार्ग पर नहीं लगेगा तो तू मोक्ष के पुरुषार्थ के अतिरिक्त जो कुछ भी करेगा वह संसार बढाने का पुरुषार्थ ही होगा, संसार बढाने का कारण ही होगा, इसलिये मात्र मोक्ष का पुरुषार्थ करना ही योग्य है।

हम धर्म के नाम पर पनपने वाली कुछ क्रियाओं से इतने आक्रान्त हैं कि हम उन्हें संसार का कारण स्वीकार ही नहीं कर पाते हैं और धर्म के नाम पर हम उनमें ही व्यस्त रहते हैं। हमें उनके बारे में इसप्रकार से निर्णय करना चाहिये कि क्या वे मोक्षमार्ग हैं, मोक्ष का साधन या कारण हैं? यदि नहीं तो निश्चय ही वे मात्र संसार का कारण ही हैं। यदि हमें मोक्ष अभीष्ट है (चाहिये) तो हमें उन क्रियाओं को हेय स्वीकार करना ही होगा, यद्यपि **उन्हें हेय मानने के बावजूद वे क्रियाएं हमारे जीवन में विद्यमान रहेंगी ही; क्योंकि वे मोक्षमार्ग की सहचारी हैं।**

यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि क्या यह हमारा दोगलापन और पाखण्डपूर्ण व्यवहार नहीं होगा कि हम निरंतर वही क्रियाएं करते भी रहें और उन्हें हेय (छोड़ने योग्य) भी मानते–कहते रहें?

नहीं! यह दोगलापन नहीं वरन संतुलित सोच और व्यवहार है। दुनियादारी में हम निरंतर यही सब कुछ करते भी हैं।

यह ठीक वैसा ही है जैसे हम कोई वस्तु खरीदते हैं तो उसके साथ उसकी पैकिंग भी आती ही है, हम उस पैकिंग की कीमत भी चुकाते हैं और उसका बोझा ढोकर उसे घर भी लाते हैं; तथापि हम मानते यही हैं कि अंतत: यह पैकिंग मटेरियल त्याज्य है, फेंक देने योग्य है, यह सिर्फ वस्तु का सहचारी है और इसकी उपयोगिता वस्तु को सुरक्षित रूप से घर ले आने तक ही सीमित है।

मैं एक बार फिर वही बात दोहराना चाहता हूँ कि यदि हम सचमुच आत्मार्थी हैं, हमें आत्मकल्याण करना है, अपने इस जीवन में आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर होकर मोक्षमार्गी बनना है तो यह तभी संभव है जब आत्मकल्याण हमारी एकमात्र प्राथमिकता बने।

दरअसल 'एकमात्र प्राथमिकता' यह एक गलत प्रयोग है क्योंकि यदि लक्ष्य अनेक हों तो उनमें से प्राथमिकताओं को क्रम दिया जा सकता है; पर यदि एकमात्र लक्ष्य हो तो उसमें प्राथमिकता कैसी? **हमें कहना चाहिये कि आत्मकल्याण ही हमारा एकमात्र लक्ष्य होना चाहिये।**

हम यदि सूक्ष्मावलोकन **(Microscopic Study)** करें तो पायेंगे कि लोकव्यवहार में भी जीवन में हमारा लक्ष्य एक ही होता है और फिर उस एकमात्र लक्ष्य की प्राप्ति के लिये, उस साध्य की सिद्धि के लिये हमारे जीवन में अनेकों क्रियाकलाप और अनेकों व्यवहार शामिल हो जाते हैं। कभी–कभी वे क्रियाकलाप और व्यवहार हमें साध्य जैसे ही दिखाई देने लगते हैं; पर वह हमारी दृष्टि का दोष है। सूक्ष्मता से विचार करने पर स्पष्ट हो जायेगा कि वे सभी क्रियाकलाप हमारे एकमात्र प्रयोजन की सिद्धि के लिये साधन मात्र ही हैं।

उदाहरण के लिये हम समझें कि मान लीजिये कि अपने प्रोडक्ट को बेचना हमारा एकमात्र लक्ष्य है। अब हम उसे बेचने के लिये एक विज्ञापन फिल्म बनाना चाहते हैं। हम देखते हैं कि वह फिल्म बनाने की प्रक्रिया के दौरान हम उसमें इतनी तन्मयता के साथ समर्पित हो जाते हैं कि देखने वालों को लगने लगता है मानो यही हमारा एकमात्र प्रयोजन है। पर हम जानते हैं कि वस्तु स्थिति तो यह है कि वह कार्य मात्र एक साधन है, लक्ष्य नहीं।

किसी भी मिशन की सफलता के लिये यह आवश्यक होता है कि हमें हमारा लक्ष्य स्पष्ट हो। एक आत्मार्थी की दृष्टि में भी यह स्पष्ट होना चाहिये कि आत्मकल्याण ही उसका एकमात्र प्रयोजन है।

वैराग्य समाचार

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन के स्वप्नदृष्टा एवं आकार–प्रदाता **श्री मुकेशजी जैन इन्दौर** का दिनांक 5 मई को 53 वर्ष की आयु में आकस्मिक देहावसान हो गया।

इस प्रसंग पर आयोजित शोक सभा में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, श्री अनंतभाई शेठ मुम्बई, श्री अशोकभाई बादर जामनगर, श्री अजितप्रसादजी दिल्ली, श्री अजितभाई बड़ौदा, श्री प्रदीपसिंहजी कासलीवाल, श्री भरतजी मोदी, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, श्री मुकेशजी 'तन्मय' विदिशा, पण्डित जयचंदजी इन्दौर, श्री मयंककुमार जैन इन्दौर, श्री नवीनजी गाजियाबाद, श्रीमती शोभाजी धारीवाल पूना,आदि अनेक गणमान्यजनों ने अपने विचार व्यक्त किये। सभी ने मुकेशजी द्वारा देखे गये ढाईद्वीप बनने के सपने को शीघ्र ही पूर्ण करने की भावना व्यक्त की।

सभा का संचालन श्री विवेकजी शास्त्री इन्दौर ने किया।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

आगम के आलोक में -

समाधिमरण या सल्लेखना

14

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जब शक्ति नहीं रहे तब धर्मात्मा, वात्सल्य अंग के धारक, स्थितिकरण कराने में होशियार ऐसे साधर्मी निरन्तर चार आराधना व पंच नमस्कार का मधुर स्वरों से बड़ी धीरता से श्रवण करावें, जैसे आराधक के निर्बल शरीर में व मस्तक में वचनों से खेद या दुःख उत्पन्न न हो तथा सुनने में चित्त लग जाय उसप्रकार श्रवण करावें।

बहुत आदमी मिलकर कोलाहल नहीं करें, एक-एक साधर्मी अनुक्रम से धर्म श्रवण व जिनेन्द्र नाम स्मरण करावे।

आराधक के निकट बहुत जनों का व सांसारिक ममत्व-मोह की कथा-वार्ता करनेवालों का आगमन रोक देवे। पंच नमस्कार या चार शरण इत्यादि वीतराग कथा सिवाय नजदीक में अन्य कोई चर्चा नहीं करे। दो चार धर्म के धारक सिवाय अन्य का समागम नहीं रहे।[१]''

उक्त कथन से यह बात अत्यन्त स्पष्ट है कि जबतक सल्लेखनाधारी अध्ययन, चिन्तन, मनन, पाठ आदि करने में स्वयं समर्थ है, सक्रिय है; तबतक कोई अन्य कुछ भी सुनाकर उसे डिस्टर्ब न करे; जब वह कमजोरी के कारण यह सब स्वयं करने में समर्थ न रहे; तब अन्य साधर्मी, जो विद्वान हों, समझदार हों, और स्थितिकरण करने में समर्थ हों; वे उसे कुछ सुनायें, कहें, समझायें; पर एकदम शान्तभाव से।

साधक के पास कोलाहल, रोना-धोना, लौकिक वार्ता बिल्कुल नहीं होना चाहिये।

भावुक लोग उनके पास न रहें, बाल-बच्चे भी दूर ही रहें। संबंधियों को भी अधिक काल तक निकट न रहने दें।

सल्लेखना की तैयारी और कुछ नहीं; मात्र स्वयं को देहपरिवर्तन के लिए तैयार करना है; वर्तमान के सभी संयोगों के वियोग को खुशी-खुशी स्वीकार करने को तैयार होना है।

जो कुछ सुनिश्चित है, जिस समय जो होना है, वह तो होगा ही; उसे रोकना संभव नहीं है और न उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन भी संभव है और जो कुछ होना है, वह सहज हो ही रहा है। हमें उसमें भी कुछ नहीं करना है। हमें तो सिर्फ सहज रहना हैं, किसी प्रकार की टेंशन (तनाव) नहीं रखना है।

सहज परिवर्तन रूप वस्तुस्वरूप को सहजरूप से स्वीकारना है, सहज ज्ञाता-दृष्टाभाव बनाये रखना है।

देह परिवर्तन, जिसे हम मरण कहते हैं; उसमें कोई दुःख नहीं है। **मृत्यु के समय किसी किसी को जो पीड़ा होती देखी जाती है, वह तो किसी बीमारी का परिणाम है।**

यदि कोई बीमारी नहीं हो तो सहज जंभाई लेते प्राण निकल सकते हैं, छींक आने के काल में देहपरिवर्तन हो सकता है।

जो दुःख की चर्चा होती है, वह तो उपसर्ग की है, दुर्भिक्ष की है, बीमारी की है, बुढ़ापे की है; वह मरण की नहीं।

वह तो आपको भोगनी ही होगी; आप सल्लेखना न लें, तब भी भोगनी होगी, उससे सल्लेखना का कोई संबंध नहीं।

पीड़ा के डर से मरण से घबड़ाने की आवश्यकता नहीं है। मरण की बात न भी हो तो भी तो हम बीमारी का तो उचित उपचार (इलाज) करते ही हैं। सल्लेखना में भी प्रतिकार शब्द से उपचार करने की आज्ञा दी ही गई है।

हमें उक्त दुःखों से घबड़ा कर मरना नहीं है, मरण को स्वीकार करना नहीं है। बस बात मात्र इतनी ही है कि यदि मरण हो ही रहा है तो समताभावपूर्वक ज्ञाता-दृष्टा भाव बनाये रखना है। हमें तो सब स्वीकार है - मर रहे हों तो मरना, जी रहे हों तो जीना, हमें किसी भी स्थिति का प्रतिरोध नहीं करना है और न किसी भी स्थिति की मांग करना है।

जब तक जीवन है, तबतक जीने के लिये तो यथायोग्य भोजनादि करना है; पर मरने के लिये कुछ नहीं करना है।

१. रत्नकरण्ड श्रावकाचार, पृष्ठ-४६५

मरने के लिये आहार छोड़ना नहीं है। सहज ही छूट जावे तो उसे सहज ज्ञाता-दृष्टा भाव से देखते-जानते रहना है।

केवली भगवान के ज्ञान में जो जिस समय होना झलका है, वह हमें बिना नाक-भौं सिकोड़े स्वीकार करना है। यदि हम यह कर सकें तो समझो हमारी सल्लेखना सफल हो गई; क्योंकि वस्तुस्थिति भी यही है और सुख-शांति भी इसी में है।

कुछ विचारकों ने इसे महोत्सव कहा है, मृत्यु महोत्सव कहा है; पर इस महोत्सव में कोलाहल नहीं है, भीड़-भाड़ नहीं है। नाच-गाना नहीं है, झाँझ-मजीरा नहीं है, आमोद-प्रमोद नहीं है, खानापीना नहीं है, खाना-खिलाना भी नहीं है। किसी भी प्रकार का हलकापन नहीं है।

कषायों का उद्वेग नहीं है, रोना-धोना भी नहीं है। शोक मनाने की बात भी नहीं है। एकदम शान्त-प्रशान्त वातावरण है, वैराग्य भाव है, गंभीरता है, साम्यभाव है।

यहाँ एक प्रश्न हो सकता है कि आप यह सब क्यों बता रहे हैं। इस बात को तो सभी लोग जानते हैं कि **यह एक गंभीर प्रसंग है, इसमें उछलकूद की आवश्यकता नहीं है।**

बात तो आप ठीक ही कहते हैं; परन्तु कुछ लोग महोत्सव का अर्थ ही विशेषप्रकार की धूमधाम समझते हैं और इस प्रसंग को भी वही रूप देना चाहते हैं। उन्हें तो कुछ भी हो, नाचना-गाना है, जुलूस निकालना है।

दीपावली पर भगवान का वियोग हुआ था, सभी जानते हैं; पर जिनको खुशियाँ मनानी हैं, पटाके छोड़ना है, लड्डू खाने हैं; वे तो खुशियाँ मनायेंगे ही, पटाके छोड़ेंगे ही, लड्डू खायेंगे ही। कौन समझाये उन्हें?

समाधिमरण और सल्लेखना एकदम व्यक्तिगत चीज है। इसे सामाजिक रूप देना, प्रभावना के नाम पर इसका प्रदर्शन करना, प्रचार-प्रसार करना उचित नहीं है।

पत्रकारों को बुलाना, रोजाना स्वास्थ्य बुलेटिन निकालना, साधक को जांच यंत्रों में लपेट देना, इन्टरव्यू लेना - ये सबकुछ ठीक नहीं है; अतिशीघ्र इस भव को छोड़ देने की तैयारी करने वालों को इन सबसे क्या प्रयोजन है?

आप कह सकते हैं कि ऐसा करने से धर्म की प्रभावना होती है।

प्रभावना तो नहीं होती, बल्कि ऐसा वातावरण बनता है कि लोग कहने लगते हैं कि **यह तो आत्महत्या है। सरकार भी दबाव बनाने लगती है। यदि कोर्ट ने कुछ कह दिया तो अपने को धर्म संकट खड़ा हो जाता है।** (क्रमशः)

चैतन्यधाम में विविध कार्यक्रम संपन्न

चैतन्यधाम-अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ दिनांक 17 अप्रैल से 4 मई तक विविध प्रकार के शिविर एवं कार्यक्रम संपन्न हुये।

दिनांक 17 से 21 अप्रैल तक द्वितीय सीनियर सिटिजन शिविर संपन्न हुआ, जिसमें पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित दीपकभाई अहमदाबाद, पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ। शिविर में लगभग 200 साधर्मियों ने लाभ लिया।

दिनांक 18 से 21 अप्रैल तक सत्र 2018-19 हेतु साक्षात्कार शिविर हुआ, जिसमें 13 छात्रों का चयन किया गया। दिनांक 22 अप्रैल को 12वीं कक्षा के छात्रों का दीक्षांत समारोह हुआ।

दिनांक 27 से 29 अप्रैल तक चतुर्थ युगल शिविर संपन्न हुआ, जिसमें पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित दीपकभाई अहमदाबाद, पण्डित नीलेशभाई मुम्बई, पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ। शिविर में लगभग 60 कपल ने ज्ञानार्जन किया।

दिनांक 22 अप्रैल को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जन्म जयंती मनाई गई, जिसमें लगभग 1000 साधर्मियों ने लाभ लिया। इस अवसर पर पण्डित शैलेषभाई तलोद ने अपने विचार व्यक्त किये।

दिनांक 29 अप्रैल से 4 मई तक 28वाँ बाल संस्कार शिविर संपन्न हुआ, जिसमें पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम, पण्डित मोहितजी शास्त्री चैतन्यधाम, पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित सजलजी शास्त्री आरोन द्वारा कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। शिविर में लगभग 300 बच्चों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

इस अवसर पर श्री अमृतलाल चुन्नीलाल मेहता, श्री अनिलभाई ताराचंद गांधी, श्री राजूलाल वाडीलाल शाह, श्री प्रतीकभाई चंद्रकांत शाह एवं समस्त ट्रस्टीगणों ने सभी आगन्तुक महानुभावों का आभार व्यक्त किया। सभी कार्यक्रमों का संचालन पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम द्वारा किया गया।

हार्दिक बधाई !

श्री सुभाषजी छाबड़ा पटनावालों के सुपुत्र **चि. अरिहंत जैन** का शुभ विवाह **सौ. कृतिका जैन** सुपुत्री श्री महेशचंद-सुनीता जैन ब्यावरवालों के साथ दिनांक 6 फरवरी को संपन्न हुआ; इस उपलक्ष्य में संस्था हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं
श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिग.जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा आयोजित

52वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 20 मई 2018 से 6 जून 2018 तक

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के भवतापहारी सी.डी. प्रवचन का प्रसारण।
- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक आत्मार्थी विद्वानों का प्रवचन, कक्षाओं के माध्यम से भरपूर लाभ।
- पाठशाला के अध्यापकों को बालबोध पाठमालायें एवं वीतराग-विज्ञान पाठमालाओं के अध्यापन हेतु विशेष प्रशिक्षण।
- देशभर के अलग-अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला।
- श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर।
- बालकों हेतु डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा विशेष कक्षायें।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

(1) ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 **(राज.) फोन-**0141-2705581, 2707458;
Email - ptstjaipur@yahoo.com
(2) तीर्थधाम सिद्धायतन, मु.पो.-द्रोणगिरी, ग्राम-सेंधपा, तह.-बड़ामलहरा, जिला-छतरपुर 471311 **(म.प्र.); मुन्नालाल जैन (मंत्री) -** 9406569839, **पण्डित शुभम शास्त्री -** 834938156, **कार्यालय -** 7389242836

द्रोणगिरि पहुंचने का मार्ग - द्रोणगिरि के लिये निकटतम रेलवे स्टेशन सागर **(SGO)** है। यहाँ से द्रोणगिरि 120 कि.मी. है, सागर से बड़ामलहरा के लिये बसें हर समय मिलती हैं। इसके अलावा ललितपुर/झांसी से भी जा सकते हैं।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

20 मई से 6 जून	द्रोणगिरि	प्रशिक्षण शिविर
7 जून से 9 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
12 से 21 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर

सोश्यल मीडिया द्वारा तत्त्वप्रचार

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी आप हमारे facebook पेज pandit todarmal smarak trust के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.facebook.com/ptst.jaipur

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी एवं सत्साहित्य का ऑनलाईन ऑर्डर देने हेतु visit करें -
www.ptst.in

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों को आप USTREAM के माध्यम से लाईव देख सकते हैं।
www.ustream.tv/channel/ptst

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों का लाभ आप हमारे YouTube चैनल PTST के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.youtube.com/user/todarmalsmaraktrust

जैनधर्म को प्रारम्भ से सीखने अथवा और भी विविध विषयों को डॉ. संजीवकुमार गोधा द्वारा YouTube पर सुनने के लिये निम्न लिंक का प्रयोग करें -
www.youtube.com/c/drsanjeevgodha

प्रकाशन तिथि : 13 मई 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com